International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(1): 154-155

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(1): 154-155
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-11-2016
Accepted: 18-12-2016

डॉ सुनीता शर्मा
सहायक आचार्य, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ सुनीता शर्मा
सहायक आचार्य, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत

वेदों में सूर्य

डॉ सुनीता शर्मा

प्रस्तावना

आरोग्य प्राप्ति के लिए वैदिक ऋषियों ने जो प्राकृतिक उपाय स्वीकार किये थे, जिसमें सूर्य की किरणों का प्रयोग अन्यतम था उनका मानना था कि रोग के किटाणु सूर्य की किरणों के सम्पर्क से नष्ट हो जाते हैं। [1]

सूर्य औषधि बनाता है, सूर्य विश्व में प्राणरूप है और अपनी किरणों के द्वारा सर्व विश्व का स्वास्थ्य उत्तम रखता है। सूर्य किरणों द्वारा (अपचितः) स्फोटक व्याधि दूर हो जाती है।

अपचितः प्रायतत सुपर्णो वसतेरिव।
सूर्यः कृणोत् भेषजं चन्द्रमा वोऽपोऽच्छतु ।।

(अथर्ववेद 6/83/1)

आधुनिक समय में मनुष्य ऐसे हैं कि वे स्वयं अंधेरे में रहकर सूर्य की प्राणशक्ति से वंचित रहते हैं और अनारोग्य में फंसते हैं।

मृत्यु के समीप पहुंचा हुआ रोगी यदि उदित होते हुए सूर्य की किरणों का कुछ दिन तक सेवन करे, तो उसमें पुनः प्राणों का संचार हो जाता है। [2] प्राचीन काल में प्रातःकाल उठकर नित्यकर्म करके सूर्याभिमुख बैठकर सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सन्ध्योपासना करने का विधान किया गया था, जिसके पीछे यह माना जाता था कि इससे रात्रि और दिन में संचित हुए दोषों का क्षय हो जाता है। [3]

अथर्ववेद के ऋषि, जानु, श्रोणि, रीढ़ की हड्डी एवं गुर्दे के रोग, नाड़ियों में फैलने वाली पीड़ाओं, शिरो रोग, हृदय की चिकित्सा उगते हुए सूर्य की किरणों द्वारा करते थे। [4]

अथर्ववेद का ऋषि भृगु, अंगिरा का मानना है कि शीर्षशूल, सिर के अन्य रोग. कर्णशूल, रक्ताल्पतता, पाण्डु रोग, मस्तिष्क सम्बन्धी रोग, कान के रोग, मनुष्य का बहरा और अन्धा बनाने वाले शिरोरोग, सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा करने वाला ज्वर, मस्तिष्क ज्वर को सूर्य की किरणों द्वारा दूर होते हैं। [5]

शरत्काल में होने वाला ज्वर, क्रोध से उत्पन्न ज्वर, हृदय से ऊपर किन्हीं कारणों से उत्पन्न ज्वर, कफ प्रधान ज्वर, कामला, रक्तहीनता, जलोदर आदि रोगोत्पन्न दोषों को सूर्य की किरणों से दूर करते हैं। इस प्रकार सभी रोगों के विष कफ, मूत्र स्वेद आदि मार्ग से बाहर आ जाएं। [6]

पेट, फैफडे, नाभि और हृदय के पास जो रोग के विष हैं वे भी उगते हुए सूर्य की किरणों से दोष रहित होकर त्वचा के छिद्रों से बाहर निकल जाते हैं। हृदय को कष्ट देने वाले रोग, पसलियों पर आक्रमण करने वाले रोग, जोड़ों में पीड़ा उत्पन्न करने वाले रोगों के विष भी उगते हुए सूर्य की किरणों के सम्पर्क से शरीर से बाहर निकल जाते है। [7]

ऋग्वेद का ऋषि कण्व का पुत्र प्रस्कण्य सूर्य को हृदय रोग और पाण्डु रोग का ही नहीं अपितु शरीर को समस्त रोगों को नष्ट करने वाला मानता है। [8] अथर्ववेद के ऋषि ब्रह्मा ने हृदय रोग और कामला रोग को दूर करने का उपाय उदित होता हुआ कपिल (लाल) वर्ण के सूर्य को बताया है। [9]

अथर्ववेद के ऋषि अंगिरा अनेक प्रकार के नये या पुराने गण्डमाला रोग के निवारण के लिए सूर्य की किरणों को अति शीघ्रकारी अमोघ भेषज मानता है। उसका कहना है कि जिस प्रकार गरूड़ को देखकर सर्प भाग जाते हैं, उसी प्रकार सूर्य के सम्पर्क से गण्डमाला रोग दूर हो जाता है। [10]

अथर्ववेद के ऋषि ब्रह्मा का मानना है कि सूर्य का प्रकाश रूपी अमृत प्राण अपान को इतना सबल बना देता है कि मृत्यु उसके पास तक नहीं आती। [11] इसलिए मनुष्य को सूर्य के प्रकाश से दूर नहीं रहना चाहिए। स्वच्छ वायु और वर्षा के जल के अतिरिक्त सूर्य ही एक मात्र साधन है जिसके ताप में तपने वाले व्यक्ति के पास मृत्यु नहीं आती। [12]

ऋग्वेद के एक अन्य ऋषि मित्रावरुण के पुत्र अगस्त्य का मानना है कि सूर्य का प्रकाश हानिकारक अथवा मृत्युदायी रोग के किटाणुओं और विषाणुओं को दूर कर देता है। [13]

ऋग्वेद के लुशथानाक ऋषि का कहना है कि प्रातःकालीन सूर्य ही नहीं सभी काल का सूर्य हमें ऐश्वर्य अर्थात धन सम्पदा और दीर्घायु प्रदान करता है। [14]

ऋग्वेद के सूर्यपुत्र अभितपा का मानना है कि दिन और रात्रि का कारण भूत सूर्य ही पृथिवी की गति का पृथिवी में जीवन का कारण है। वही जल वृष्टि के द्वारा हमें आरोग्य देता है और उदय के समय रोगों को दूर करके प्राणों का संचार कर हमें जीवन प्रदान करता है। [15]

सूर्य दिशाओं में तमरूप अन्धकार को, हमारे अन्तःकरण से तमोगुण को दूर करके हमारी शारीरिक और मानसिक पीड़ाओं को दूर करता है। [16] सूर्य का दर्शन करके उसकी किरणों के सम्पर्क में आकर हम समस्त आधिव्याधियों से मुक्त होकर दीर्घायुष्य को प्राप्त करके वृद्धावस्था में भी कल्याणतय जीवन जीते हैं। [17]

सूर्य की इन जीवनदायिनी आरोग्यनाशक शक्तियों का साक्षात्कार करके ब्राह्मण ग्रन्थों में उसे पिता [18] धाता [19] पुरोहित [20] आदि विशेषणों से विशेषित किया जाता है।

हृदय रोगी, कामला, पाण्डुरोगी को प्रातःकाल के समय नारंगी रंग वाले सूर्य के सम्मुख बैठना चाहिए और उस पर सूर्य प्रकाश पड़ने देना चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में नग्न शरीर और शीतकाल में हल्के साधारण वस्त्रों को पहनाकर बैठाना चाहिये। [21]

सूर्योदय समस्त जगत् का प्राण है। [22] नारंगी रंग वाले पात्रों एवं साधनों का रोगी के पास रहना, उसका उपयोग करना तथा उनमें रखे जल आदि का सेवन करना भी लाभदायक होता है। यह चिर-जीवन एवं दीर्घायु का साधन भी कहा गया है यह रोगों के दोषों को दूर करके शरीर को रक्तवर्ण तथा कान्तिमान बना देने में परम उपयोगी है। ऐसे रोगियों को नारंगी सन्तरे, सेब आदि फल खिलाने तथा शुभ्र गुलाबी रंग के फूलों से विनोद कराने से अच्छा लाभ होता है। [23] इसके अतिरिक्त अपचित, ग्लौ, गलन्तु श्वित्र आदि रोगों को भी सूर्य किरणें नष्ट करती हैं। [24]

सूर्य ताप में पानी, दुग्ध और अन्य भोज्य पदार्थों को रखकर पीना, खाना और प्रयोग करना चाहिए। इससे रक्त शुद्धि होती है और रक्त में मिला अपचित, ग्लौ आदि रोगों का विष नष्ट हो जाता है। चन्द्रमा की चाँदनी रातों में रातभर जल, लेप आदि रखकर प्रक्षालन एवं लेपन करना चाहिए। इससे गण्डमाला में होने वाला दाह और विष नष्ट हो जाता है। सूर्यरश्मि से शीर्षक्ति रोग, शीर्षामय, जीर्णशूल, विलोहित विसल्यक, अंगज्वर, तक्मन, अरु एवं गवीविकाओं से उत्पन्न रोग, बलास, हरिमा, उदरशूल, मूत्र रोग, पार्श्वशूल गुदा रोग, अलर्जी, पैर श्रोणी प्रमृति रोगों को सूर्योदय की किरणें नष्ट करती हैं। [25]

सूर्यरश्मि चिकित्सा बहुत उपयोगी है। इससे मनुष्य को विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति एवं आरोग्यता प्राप्त होती है। सूर्य किरणों से रोगोत्पादक किटाणुओं का विनाश हो जाता है।

अथर्ववेद में प्राकृतिक चिकित्सा के अन्तर्गत स्वास्थ्य की सम्पूर्णतया सुरक्षा तथा अस्वास्थ्य की स्थिति में सम्पूर्ण स्वास्थ्य की प्राप्ति के उपायों का समावेश किया गया है। वैदिक ऋषि यह मानते थे कि सब को पवित्र करता हुआ वायु, तपता हुआ सूर्य, मेघ और उनसे बरसने वाला जल मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए अतिशय कल्याणकारी है।

अतः स्पष्ट है कि वैदिक ऋषि सम्पूर्णतया सुखपूर्ण जीवन के लिए प्रकृति अथवा उसके उपहार के रूप में दिये गये वनस्पति, दूध, घृत, मूत्र आदि का प्रयोग करते हुए आरोग्य की सुरक्षा करते थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ऋग्वेद 10/100/8 अपाऽभीवा सविता साविषत्।
2. अथर्ववेद 17/1/30
3. मनुस्मृति 2/101-102
4. अथर्ववेद 6/8/21-22
5. अथर्ववेद 6/8/1-5, 22
6. अथर्ववेद 6/8/6-10, 22
7. अथर्ववेद 6/8/11-20, 22
8. ऋग्वेद 1/50 /11, 13
9. अथर्ववेद 1 / 22/1-2
10. अथर्ववेद 6/83/1-2
11. अथर्ववेद 8/1/1
12. अथर्ववेद 8/1/4
13. ऋग्वेद 1/161/8-6
14. ऋग्वेद 10/36/4
15. ऋग्वेद 10/27/2
16. ऋग्वेद 10/37 / 4
17. ऋग्वेद 10/37/6
18. शतपथ ब्राह्मण 14/1/4/15
19. शतपथ ब्राह्मण 6/5/1/37
20. ऐतरेय ब्राह्मण 8/27
21. अथर्ववेद 1 / 22/1
22. प्राणः प्रजानामदयत्येष सूर्य। प्रश्नो व ⅛
23. अथर्ववेद 1/ 22/2
24. अथर्ववेद 6/83/1-4
25. अथर्ववेद 9/8/1-22